प्राचीन राजस्थान में सौर सम्प्रदाय

डॉ. अनिता सुराणा,

व्याख्याता,

आर. एल सहरिया राजकीय महाविद्यालय, कालाडेरा (जयपुर)

सूर्य पूजा करने वाले सम्प्रदाय को 'सौर सम्प्रदाय' के नाम से जाना जाता है। वैष्णव, शैव, शाक्त तथा गाणपत्य मतों की भाँति सौर मत भी भारतीय जन जीवन में प्राचीन काल से लोकप्रिय रहा है। नित्य प्रति उदय होकर रात्रि के अंधकार को नष्ट कर अपने प्रकाश से नवजीवन की चेतना का संचार करने वाला, आरोग्य प्रदायक सूर्य आदि मानव की श्रद्धा का केन्द्र बना। पाषाण कालीन मानव ने शिलाओं, गुहाभित्तियों एवं पाषाण उपकरणों पर उसके प्रतीकात्मक स्वरूप को अंकित किया। गम्भीरी, बेडच, चम्बल, कामनी, रूपरेल, सानवा आदि नदी–घाटियों में मिले पुरातात्विक साक्ष्य यह सिद्ध करते है कि राजस्थान में पुरापाषाण काल में मानव जीवन आरम्भ हो चुका था। यह अनुमान सहज ही किया जा सकता है कि भारत के अन्य स्थानों के समान राजस्थान का पाषाणकालीन मानव भी प्राकृतिक शक्ति के रूप में सूर्य के प्रति श्रद्धा रखता होगा। प्रतीक रूप में सूर्योपासना की परम्परा आद्यैतिहासिक सिंधु सभ्यता में भी विद्यमान थी। स्वस्तिक, चक्र, किरणों युक्त वृत, नेत्र, पक्षी आदि सूर्य से सम्बद्ध प्रतीक चिन्ह इस सभ्यता के प्रमुख केन्द्रों से प्राप्त पुरावशेषों पर अंकित है। सिंधु सभ्यता का एक प्रमुख केन्द्र कालीबंगा, राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में स्थित है। यहाँ से प्राप्त एक पात्रावशेष पर सूर्य चिन्ह अंकित है। राज्य से प्राप्त सूर्य प्रतीकों के संदर्भ में यह प्रथम उपलब्ध साक्ष्य है।

ईसा पूर्व एवं ई. सन् की आरम्भिक शताब्दियों में राजस्थान में सूर्य पूजा की लोकप्रियता मौद्रिक साक्ष्यों से भी प्रमाणित होती है। टोंक जिले के रेढ़ से प्राप्त रजत सक्कों एवं नगर से प्राप्त मालव गण के सिक्कों पर सूर्य चिन्ह अंकित है। राज्य के उत्तर–पश्चिमी भाग से प्राप्त चौथी शती ई. के मालव सिक्कों पर सूर्य–मूर्ति अंकित है । मारवाड़ के गुर्जर प्रतिहारों के सिक्कों के पृष्ठभाग पर वराह के साथ सूर्य चक्र भी अंकित है।

राजस्थान से ऐसे अनेक प्राचीन अभिलेख मिले है जिनसे इस क्षेत्र में सूर्योपासना की लोकप्रियता रेखांकित होती है। 423 ई. का गंगधार शिलालेख, 689 ई. का झालरापाटन का शिवमंदिर अभिलेख एवं 713 ई. का चित्तोड़ के मानमौरी का स्तम्भ लेख, आदि ऐसे प्रारम्भिक उदाहरण है जिनमें सूर्य के वंदनीय स्वरूप का उल्लेख मिलता है। राजस्थान में सूर्योपासक मग ब्राह्मणों का प्रथम उल्लेख 861 ई. के घटियाला अभिलेख में मिलता है। मारवाड़ एवं मेवाड़ क्षेत्र के अनेक अभिलेखों में सूर्य मंदिरों के निर्माण, पुनर्निमाण और समय–समय पर उन्हें दी जाने वाले भेंटादि का उल्लेख मिलता है।

राजस्थान के कतिपय प्राचीन साहित्यिक ग्रंथों में भी सूर्य देव की उपासना के उल्लेख मिलते है। इनमें हरिभद्रसूरि कृत धूर्ताख्यान, उद्योतन सूरि की कुवलयमाला, चन्दबरदाई की पृथ्वीराजरासों और जयानक का पृथ्वीराजविजय विशेष उल्लेखनीय है जिनमें संकट के समय सूर्य देव के आह्वान किये जाने का वर्णन मिलता है।

सौर कलाकृक्ति सम्बंधी प्राचीनतम् साक्ष्य सांभर के समीपस्थ नलियासर नामक स्थान से मिला है। कुषाणकालीन मृण्मय फलक पर

रथारूढ़ सूर्य अंकित है। हनुमानगढ़ से उत्तरकुषाणकालीन पाषाण फलक पर आसनस्थ सूर्य प्रतिमा मिली है। गंगानगर जिले में स्थित रंगमहल से एक गुप्तकालीन प्याला मिला है जिस पर अंकित मानवाकृक्तियों को युगल सूर्य प्रतिमाओं से समीकृत किया गया है। राजस्थान से गुप्तकालीन सूर्य प्रतिमाओं की उपलब्धि अत्पल्य है परन्तु पूर्वमध्ययुगीन सौर प्रतिमाओं की बहुसंख्या में प्राप्ति सौर सम्प्रदाय के लोकप्रिय होने का सबल प्रमाण है। 7 वी से 13 वी शती ई. के मध्य राजस्थान के लगभग प्रत्येक क्षेत्र से सूर्य मूर्तियाँ मिली है। उपलब्ध सौर प्रतिमाएँ विविध प्रकार की है उदाहराणार्थ आसनस्थ, स्थानक, रथारूढ़, एकमुखी, त्रिमुखी, द्विभुजी, चतुर्भुजी एवं अष्टभुजी, चरणों में लम्बे अथवा छोटे जूते, कवच द्वारा आवृत अथवा अनावृत वक्ष इत्यादि। राजस्थान से अनेक ऐसी सूर्य प्रतिमाऐं मिली हैं जिनकी कुछ विशेषताएँ विलक्षण और प्रायः दुर्लभ है। वर्माण में एक प्रतिमा में सूर्य को अश्व पर उत्कूटिकासन मुद्रा में आरूढ़ अंकित किया गया है। चित्तौड़ के कालिका मंदिर की कतिपय प्रतिमाओं में सूर्य रथ के नीचे अंधकार के दानवों को प्रदर्शित किया गया है तथा धनुर्सधा किये हुए सूर्य पत्नियाँ उषा और प्रत्यूषा अंकित है। धनुर्धारी उषा, प्रत्यूषा का अंकन तो लोकप्रिय है किन्तु रथ के नीचे दानवों का अंकल दुर्लभ है। सर्पफण वितान विष्णु एवं ब्रह्मा के पृथक पृथक संयुक्त रूप मशः मार्तण्ड भैरव, सूर्यनारायण एवं मार्तण्ड पितामह कहलाया। त्रिमूर्ति के साथ सूर्य का समन्वित रूप हरिहर मार्तण्ड पितामह के नाम से विख्यात है। ये संपृक्त प्रतिमाएँ भवाल, रणकपुर, किराडू, ओसियां, हर्षनाथ, वर्माण, नागदा, झालावाड़ आदि स्थानों से प्राप्त हुई है। हाड़ौती क्षेत्र में संपृक्त प्रतिमाओं की विपुल उपलब्धि उल्लेखनीय है। सूर्य की व्यक्तिगत एवं संपृक्त प्रतिमाओं के अतिरिक्त सूर्यपुत्र रेवन्त, यम, अश्विनीकुमार द्वय एवं नवग्रहों और नक्षत्रों की प्रतिमाएँ भी राजस्थान से प्रचुर संख्या में मिली है।

ई.पू. की पंचम–चतुर्थ शताब्दी में भक्ति प्रधान विचारधारा के प्रसार क्रम में सौर सम्प्रदाय का उद्भव एवं विकास हुआ और मंदिर बनाकर सूर्यपूजा करने की परम्परा प्रारम्भ हुई। भारत में सूर्य मंदिर निर्माण के निर्विवाद प्रमाण गुप्तकाल से पूर्ववर्ती नहीं है। बंधुवर्मा के मंदसौर अभिलेख में रेशम बुनकरों द्वारा 437–38 ई. में मंदसौर में सूर्य मंदिर बनवाने का उल्लेख मिलता है। भौगोलिक, सांस्कृतिक और प्राचीनकाल में राजनीतिक रूप से मंदसौर के निकट स्थित राजस्थान में गुप्तकालीन सौर मंदिरों एवं मूर्तियों की सूचना का अभाव है। इसके विपरीत गुप्तोत्तर काल में आदित्य भक्त नरेशों, सामन्तों और जनसाधारण द्वारा सूर्यमंदिर बनवाने और उन्हें उदारतापूर्वक दान देने के पर्याप्त साक्ष्य मिलते है।

मेवाड़ क्षेत्र में 8 वी शती ई. का चित्तोड़ का सूर्य मंदिर राजस्थान के प्राचीनतम् सूर्य मंदिरों में से एक है। अपने मूलस्वरूप में यह प्रासाद भगवान सूर्यनारायण को समर्पित एक विशिष्ट संरचना है जो वास्तुकला के साथ–साथ मेवाड़ की तत्कालीन समुन्नत मूर्तिकला का भी परिचय देता है। सूर्यदेव को पूर्णतः समर्पित टूस का देवालय इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय है कि इसमें सूर्य के अतिरिक्त किसी अन्य देवता की प्रतिमा नहीं है। आहाड़, घोटार्सी, गंगरार और नांदेसमा के सूर्य मंदिर भी उल्लेखनीय है। बागड़ क्षेत्र के चीच और तलवाड़ा में सूर्यमंदिरों के अवशेष है। हाड़ौती क्षेत्र के झालरापाटन में 10 वी शती ई. का सूर्य मंदिर है। विशाल रथ के आकार में बने इस मंदिर को 'राजस्थान का कोणार्क' भी कहा जा सकता है। बूढ़ादीत ग्राम का 9 वी शती ई. का सूर्य मंदिर एवं स्वयं ग्राम का नाम (वृद्ध आदित्य) इस अंचल में सौर सम्प्रदाय की लोकप्रियता का द्योतक है। सौर कलाकृतियों की दृष्टि से सर्वाधिक समृद्ध क्षेत्र अर्बुदमण्डल है। रोहेड़ा, नीतोरा, वासा, बसन्तगढ़, मीरपुर, पिण्डवाड़ा, वर्माण का ब्रहाण स्वामी एवं अनाद्रा

का प्रसिद्ध क्रोड़ीधज नामक सूर्य मंदिर उक्त कथन की पुष्टि करते हैं। मारवाड़ का भीनमाल क्षेत्र, सूर्योपासना का लोकप्रिय केन्द्र था। यहाँ गुर्जर प्रतिहारों ने जगतस्वामी नामक सूर्य मंदिर बनवाया था। ओसियाँ में 9 वी 10 वी शती ई. के दो सूर्य मंदिर है। पालड़ी, बामणेरा, पोकरण और बाड़मेर से भी प्राचीन सूर्यमंदिरों के प्रमाण प्राप्त हुए है। नागौर जिले के थाँवला ग्राम में स्थित शिवालय को दशरथ शर्मा ने मूलतः सूर्य मंदिर माना है। धौलपुर में सूर्य मंदिर के अभिलेखीय साक्ष्य और भरतपुर क्षेत्र में सत्वास का सूर्य मंदिर राजस्थान के पूर्वाचल में सौर सम्प्रदाय की उपस्थिति को रेखाकिंत करते है।

प्रचुर संख्या में प्राप्त सौर कलाकृतियाँ एवं मंदिर जहाँ एक ओर सौर सम्प्रदाय की लोकप्रियता को बताते है वहीं इनमें से अधिकांश की, कलान्तर में अन्य देवगृहों में परिणति सौर धर्म की शिथिलता को भी रेखाकिंत करती है। एकान्तिक उपासना के लोकप्रिय होने और सौर धर्म के अत्यधिक आचारपरक होने एवं इसमें तंत्र–मंत्र के प्रवेश हो जाने से सौर सम्प्रदाय शनैः शनैः गौण स्थिति को प्राप्त होने लगा। लोकप्रियता में हास के बावजूद सौर सम्प्रदाय लुप्त नहीं हुआ है। राजस्थान के अनेक क्षेत्रों में सूर्योपासक मग, सेवक, भोजक और सांचीहर लोग रहते है। 15 वी शती ई. में बना रणकपुर का भव्य सूर्य मंदिर, गलता (जयपुर) का अर्वाचीन सूर्य मंदिर एवं किशनगढ़ (अजमेर) का नवगृह मंदिर सूर्योपासना की परवर्ती लोकप्रियता के उल्लेखनीय प्रमाण है। त्रिकाल सन्ध्योपासना, गायत्रीमंत्र जाप, स्नानोपरांत सूर्य अर्घ्य प्रत्येक धर्मनिष्ठ हिन्दू का आज भी नियमित कर्म है।

संदर्भ–सूची

1. आर्क्यालाजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, एनुअल रिपोर्ट, 1928–29, पृ.27 ।
2. एपिग्रैफिया इण्डिका, भाग–24, पृ. –331–32 ।
3. फलीट, जे.एफ., कार्पस इंशक्रिप्शनम् इण्डिकेरम, वो.–3, पृ.–252–54 ।
4. टॉड, कर्नल, एनाल्स एण्ड एण्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान, भाग–1, (अनु.) जयपुर, 1987, पृ. 625–26, आर्क्यालाजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, एनुअल रिपोर्ट, 1934–35, पृ. 56–57 ।
5. एपिग्रैफिया इण्डिका, वो.–9, पृ.–277–79 ।
6. साहनी, दयाराम, आर्क्यालॉजिकल रिमेन्स एण्ड एक्सकेवेशन्स एट सांभर, 1936–37, 1937–38, जयपुर स्टेट, पृ.–25 ।
7. प्रोग्रेस रिपोर्ट, आर्क्यालॉजिकल सर्वे, वेस्टर्न सर्किल, 1921, पृ.116 ।
8. द्रष्टव्य, जैन, के.सी., एंशियेट सिटीज एण्ड टाउन्स ऑफ राजस्थान, पृ. 142 ।
9. श्रीवास्तव, वी.सी., सनवर्शिप इन एंशियेंट इण्डिया, पृ.248 ।
10. फ्लीट, पूर्व निर्दिष्ट, पू.–79–88 ।
11. आर्क्यालॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, एनुअल रिपोर्ट, 1934–35, पृ.–56–57।
12. अग्रवाल, आर.सी., 'ए न्यूली डिस्कवरड सन टेम्पल एट दूस', भारतीय विद्या, वो. 23, 1963, पृ.–56–58 ।
13. श्रीवास्तव, विजयशंकर, 'कोटा क्षेत्र का अज्ञात सूर्य मंदिर', वरदा, अक्टूबर 1963, पृ.–5–12, 'बूढ़ादीत : ए लिटिल नॉन

सन टेम्पल इन हाड़ौती रीजन', रिसर्चर, वो.–3–4, पृ 10–18 ।

14. प्रोग्रेस रिपोर्ट, आर्क्यालॉजिकल सर्वे, वेस्टर्न सर्किल, 1917, पृ.71–72।
15. मार्ग, वो.–12, अंक–2 (1959, मूर्तिकलांक), पृ.56।
16. भण्डारकर, डी.आर., 'दि टेम्पल्स ऑफ ओसिर्यो', एनुअल रिपोर्ट आर्क्यालॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, 1908–9, पृ. 100–15, ओझा, जी.एच., हिस्ट्री ऑफ दि जोधपुर स्टेट, पृ. 28–29।
17. वरदा, वर्ष–5, अंक–2, पृ.2–7 ।

Copyright © 2016 *Dr. Anita Surana*. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.